UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 17
अमरकंटक से डिंडौरी (मंजरी)

पाठ का साट (सारांश)

प्रस्तुत पाठ में लेखक अमृतलाल बेगड़ ने नर्मदा-सौन्दर्य के साथ-साथ नदी तट के जन-जीवन की झलक वर्णित की है। यात्रा नर्मदा के किनारे-किनारे से वर्णित हुई है।
अमरकंटक जहाँ नर्मदा का उद्गम स्थल है, कोई बड़ा पहाड़ नहीं है। लेखक जाते समय इस पर पगडंडी से केवल दो घण्टे में ही चढ़ गए। यहाँ कपिलधारा के सामने गहरी घाटी चौड़ी हो गई, मैदान आ गया। नर्मदा को मेकलसुता भी कहा जाता है क्योंकि अमरकंटक का नाम मेकल भी है। पगडंडी मिल जाने पर शाम तक पकरीसोदो पहुँचे।

दूसरे दिन पदयात्रा करते किरंगी गाँव आ गए। एक ग्रामीण के घर ठहरकर अखण्ड कीर्तन और आम के पेड़ के विवाह में शामिल हुए। गारकाभट्टा में गोपी कोटवार के घर रहे। यहाँ एक शादी में दूल्हा-दुल्हन के पैर पूजे जा रहे थे। यहाँ से आगे चलने पर नर्मदा का एक प्रपात कोठीघुघरा मिला। अगला पड़ाव था बंजरटोली। इसके सिवनीसंगम पर सिवनी नदी नर्मदा से मिलती है। बैसाखी पूर्णिमा के दिन खूब बरातें देखने को मिलीं। मैदान में पगडण्डी की परवाह किए बिना नर्मदा के किनारे-किनारे चलना आसान था। पथरकुचा तक पहुँचते-पहुँचते वर्षा हो गई और कीचड़ होने से रात में रुकना पड़ा।

दूसरे दिन लिखनी गाँव में पहुँचे, जहाँ एक वृद्धा ने भोजन-पानी से सेवा की। अगला पड़ाव मझियाखार था और इसके बाद गोमतीसंगम और लछमणमड़वा। दोपहर होने पर डिंडौरी पहुँचे जो एक बड़ा कस्बा है। वहाँ नर्मदा पार करने वाले ग्रामीणों का क्रम चलता रहता है। लोग नर्मदा मैया की जय बोलकर सावधानीपूर्वक तेज प्रवाह में मुख्यधारा से पार होते हैं। यह दृश्य बहुत रोमांचकारी होता है। तीन दिन तक यहाँ मगन रहकर अमरकंटक से डिंडौरी तक की आसान यात्रा पूरी की। इसमें आधे दिन का पहाड़ एक दिन का जंगल और कुछ दिनों का सँकरे मैदान का भ्रमण शामिल था।

https://www.evidyarthi.in/